

कामकाजी महिलाओं का खेल एवं शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

Dr. Adarsh Tiwari *

ABSREACT

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध: "कामकाजी महिलाओं का खेल एवं शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन" (शहडोल संभाग के विशेष संदर्भ में) अध्ययन किया गया। जिसके अन्तर्गत साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग कर विभिन्न क्षेत्रों की ३०० शासकीय, अर्द्धशासकीय, अशासकीय एवं स्वरोजगार से जुड़ी ३०० महिला प्रतिनिधियों से जानकारी एकत्र की गई एवं उनका सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, स्थिति एवं खेल एवं शिक्षा के प्रति रुचि का अध्ययन किया गया। कामकाजी महिलाओं के खेल एवं शिक्षा से सम्बन्धित अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निम्नलिखित हैं रु अधिकतर कामकाजी महिलाओं ने खेल को जीवन में बहुत आवश्यक होना बताया, जबकि २०.०० प्रतिशत कामकाजी महिलाओं ने इसके महत्व को अल्प रूप में ही स्वीकार किया है। अधिकतर महिलाओं को खेल पसंद है, २०.०० प्रतिशत महिलाओं को खेल पसन्द नहीं है तथा २४.६७ प्रतिशत महिलाओं को खेल कभी पसंद हैं। ३८.०० प्रतिशत कामकाजी महिलाओं को खेलों में सहभागिता करना पसंद है, जबकि अधिकतर कामकाजी महिलाएं खेलों को देखना ही पसंद करती हैं। अधिकतर महिलाएं इन्डोर खेलों को पसन्द करती हैं और ४४.३३ प्रतिशत महिलाएं आउटडोर खेलों को पसन्द करती हैं । अधिकतर महिलाएं रोजगार के साथ खेलों को समय देती हैं, केवल २३: महिलाओं अपने सामान्य जीवन एवं रोजगार में व्यस्तता के कारण खेलों को समय नहीं दे पाती। ४२.०० : पारिवारिक सदस्य कामकाजी महिलाओं के चहुंमुखी व्यक्तित्व विकास के पक्षधर हैं। कामकाजी महिलाओं के खेलों में रुझान से ३०.०० प्रतिशत पारिवारिक सदस्य आंशिक अप्रसन्न हैं। कामकाजी २८.०० प्रतिशत महिलाओं ने इस प्रसन्न के संबंध में अनभिज्ञता जाहिर की है। खेलों में परिवार के लोगों का सहयोग के संदर्भ में ३८.६६ प्रतिशत महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि उनके परिवार के लोग खेलों के लिए उनका सहयोग नहीं करते। ४५.३४ प्रतिशत महिलाओं की भूमिका और कार्यों के प्रति समाज के विचारों में सकारात्मक परिवर्तन परिलक्षित हो रहे है। कामकाजी ४४.६६ : महिलाओं ने इस प्रश्न के संबंध में अनभिज्ञता जाहिर की है।

Keywords: कामकाजी महिलाएं खेल, शासकीय, अर्द्धशासकीय, अशासकीय एवं स्वरोजगार

* Sports Officer, Pt. S. N. S. Govt. (Autonomous) P.G. College Shahdol (M.P.).

INTRODUCTION

समाज के व्यापक वृत्त में महिलाओं की अस्मिता को उनकी भूमिका से पृथक नहीं देखा जा सकता। यदि भारतीय सांस्कृतिक धरोहर तथा सामाजिक स्थापनाओं में महिलाओं को परिवर्तित परिस्थितियों में पाया गया है तो अवश्य ही तत्कालीन दृष्टिकोण एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य को अनदेखा नहीं किया जा सकता। वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति एवं उन्नत अपेक्षाओं के बावजूद सामाजिक वास्तविकता को नकार कर किसी प्रकार का अध्ययन संभव नहीं है। सामाजिक आरोपण के फलस्वरूप महिला की अवनति तथा उच्चतर सामाजिक आयामों में महिला समानता एवं समस्तरीयता को इंगित करना अपेक्षित है। प्रक्रिया किसी भी दशा, दिशा एवं परिस्थिति में देखी जाये किन्तु पुरुष बनाम महिला से प्रेरित सामाजिक दृष्टि केवल विरोधाभासों की जन्मदात्री ही रहेगी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में महिलाओं को वस्तुतः वे सभी अवस्थात्मक एवं संवैधानिक अधिकार प्राप्त हैं जो नागरिक समानता एवं न्याय के प्रतिमान हैं, किन्तु यह दावा कि महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टि में सांगोपांग परिवर्तन हुए हैं, नितान्त विरोधाभास ही हैं। अवश्य ही स्वतंत्र समाज में महिलाओं को किसी घटक विशेष के रूप में देखना अदूरदर्शिता का सूचक है। महिला को घटक मात्र मानकर ही सामाजिक दृष्टिकोण इस प्रकार विकृत एवं दिशाहीन दिखाई देते हैं, जिनके अंतरंग में यह सत्य देखा जा सकता है कि राजनीतिक स्वायत्तता, सामाजिक स्वायत्तता से यदि समीकृत नहीं होती तो अवश्य ही विकास तथा प्रगति संदिग्ध बने रहते हैं।

उत्तर आधुनिक परिदृश्य में नारीवाद से जुड़ी बहसों का आधार सामाजिक वृत्तियाँ एवं सांस्कृतिक अवस्थाएँ हैं। वैश्विक धरातल पर देखा जाय तो तीसरी दुनियाँ या पिछड़े हुए एशियाई, अफ्रीकी तथा लैटिन अमरीकी एवं दक्षिण एशियाई देश, जिनमें भारत भी है, इन सबकी हैसियत आज से पहले मानव समाज के दूसरे, अर्थात् केन्द्र से विस्थापित हुए अन्य की थी। उनकी संस्कृति, उनके साहित्यिक विमर्श और उनकी अस्मिता पर ध्यान उत्तर आधुनिक युग की उपलब्धि है। इसी तरह महिला भी, जो शताब्दियों तक पुरुष समाज का दूसरा, अर्थात् अन्य समझी जाती थी, अब काफी हद तक सामाजिक विमर्श के केन्द्र में आ गई है। डॉ. प्रभा खेतान का यह उद्धरण पर्याप्त है, कि इनलाइटेनमेंट युग से मार्क्सवादी युग तक किस प्रकार महिला अस्मिता के प्रश्न को अन्याय विधि-विधानों के जरिये संरक्षित, सुरक्षित एवं अनुदघटित रखा गया। शस्त्र हो या परम शान्ति, शास्त्र हो या संविधान, हर जगह वह परिधिकरण का शिकार हुई है। पिछली शताब्दी में उसने पुरुषों के बराबर हक की माँग की थी और आज मिले हुए अधिकारों के सबलीकरण का सवाल है। लेकिन इस सवाल में यह आशंका अब भी जीवित है कि फिर कोई उनके साथ खिलवाड़ न करे। उत्तर आधुनिक दौर की महिला अपनी पहचान के प्रति इतनी सचेत है कि वह हमेशा यह जानने का प्रयास कर रही है, कि वे पुरुष जो उससे संवेदना रखते हैं, और उसके बारे में लिख रहे हैं, उसके कितने करीब अथवा दूर हैं। वह यह भी समझने का प्रयास कर रही है कि पूँजीवादी पितृसत्ता चाहे जितनी सरल और उदार लगे, पर भीतर से यह कितनी जटिल है, क्योंकि दोष इसकी संरचना में ही है। उत्तर आधुनिक दौर में महिला सशक्तिकरण के विविध परिप्रेक्ष्यों में उसका संघर्ष भी महत्वपूर्ण है, लेकिन वह संघर्ष भी करे तो किससे, और किसके द्वारा? जब तलवारें पराई हों, धारें पराई हों और यहाँ तक कि म्यान भी पराई हों, और पुरुषों की माप की मूठें उसकी पकड़ से बाहर हों। दरअसल सशक्तिकरण का संघर्ष पहाड़ियों के पीछे छिपे सैनिकों से सीधे मुठभेड़ की बजाए अपने ही भीतर संस्कारों, संवेदनाओं, स्वत्वहीन मर्यादाओं एवं आरोपित समर्पण की अनर्गल प्रथाओं के विरुद्ध लड़ने की आवश्यकता है।¹ उत्तर आधुनिक अवस्थाएँ इन सबके लिए सम्पूर्ण मंच देती हैं। प्रस्तुत प्रबंध में इस दौर की नव्य वैचारिक एवं उत्तर संरचनावादी सैद्धांतिकी के द्विचर विरोधों की वरीयतापरक हैसियत को केन्द्र में रखते हुए महिला सशक्तिकरण के यथार्थ एवं परिणामों पर विचार करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रतिवेदन की प्रविधि विश्लेषणात्मक, समालोचनात्मक तथा विमर्शपरक है।

समाज में कामकाजी महिलाओं के मानवीय अधिकारों की कुल स्थिति यह है कि कहने को तो महिलाओं के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है, कानून बन रहे हैं, उन्हें राजनीति में भागीदारी कराने का निर्णय लिया जा रहा है, अनेक महिला संगठन भी महिलाओं के अधिकारों को लेकर संघर्ष कर रहे हैं, किन्तु बात आगे नहीं बढ़ सकी है, सुधार को संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। माना जाता है कि पुरुषों पर महिलाओं की निर्भरता कम हो तो स्थिति बदलेगी। निःसंदेह इससे फर्क पड़ेगा किन्तु सबसे बड़ी और मूल बात पुरुषों की मानसिकता में परिवर्तन लाने की है, उन्हें शिक्षित करने की है। शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में पुरुषों और महिलाओं से सम्बन्धित समान सामाजिक अधिकारों का ज्ञान देने की कोई व्यवस्था नहीं है। परिणाम यह होता है कि पुरुषों का व्यवहार भी महिलाओं के प्रति नितांत रूढ़िवादी बना रहता है। सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि प्राइमरी स्तर से ही बच्चों को चाहे वह बालक हो या बालिका, मानवीय अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया जाये। विशेष रूप से बालकों को बचपन से ही महिलाओं के प्रति रूढ़िवादी दृष्टिकोण बदलने के लिए शिक्षित किया जाए तभी स्थिति में परिवर्तन आयेगा। यदि सरकार महिलाओं के मानवीय अधिकारों के प्रति और भी अधिक जागरूक होकर उनके समान अधिकारों सम्बन्धी शिक्षा देने तथा एक ऐसी पीढ़ी तैयार करने पर जोर लगाए जिसके मन और मानसिकता में परम्परावादी लिंगभेद न हो तो समाज में एक बड़ा परिवर्तन आ सकता है। इसके लिए सर्वप्रथम प्रमुख बात यह है कि कामकाजी महिलाओं को स्वयं जागरूक होकर अपने अधिकारों के प्रति सजग होना चाहिए और इसके लिए आवश्यक है कि महिला संगठनों, मानव अधिकार आयोग व अन्य संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित किया जाये।

METHODOLOGY

Selection of Subjects:

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध: "कामकाजी महिलाओं का खेल एवं शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन" (शहडोल संभाग के विशेष संदर्भ में) अध्ययन किया गया। जिसके अन्तर्गत साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग कर विभिन्न क्षेत्रों की 300 शासकीय, अर्द्धशासकीय, अशासकीय एवं स्वरोजगार से जुड़ी 300 महिला प्रतिनिधियों से जानकारी एकत्र की गई एवं उनका सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, स्थिति एवं खेल एवं शिक्षा के प्रति रुचि का अध्ययन किया गया।

Procedure of Data Collection:

साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त आँकड़ों के वर्गीकरण, सारणियाँ एवं विश्लेषण के द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि 300 कामकाजी महिलाओं का खेल एवं शिक्षा के प्रति क्या दृष्टिकोण है।

विभिन्न सारणियों के माध्यम से कामकाजी महिलाओं की खेल में पसंदगी, खेल से उनके व्यक्तित्व और जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का शोधार्थी द्वारा चित्रण करने का प्रयास किया गया है। कामकाजी महिलाएं किस तरह अपने सामान्य जीवनचर्या, व्यवसाय एवं यदि उन्हें खेलों में रुचि है तो खेल के प्रति किस प्रकार सामंजस्य बनाती हैं, इसका प्रस्तुतिकरण करने का प्रयास भी किया गया है।

खेलों के प्रति रुझान, अपनी पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन, कार्य में कुशलता, व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों के बीच सामंजस्य बनाने एवं जीवन की समस्त कठिनाइयों का निराकरण करते हुए वे किस प्रकार अपने जीवन के विकास पथ पर अग्रसर हैं, साथ ही उनके कामकाजी होने का उनके परिवार एवं समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, यह जानने का प्रयास भी किया गया है।

ANALYSIS OF DATA AND RESULTS OF STUDY

प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान, शोधार्थी ने शोध हेतु चयनित 300 कामकाजी महिलाओं से, खेल जीवन के लिए आवश्यक है या नहीं, जब जानने का प्रयास किया तो निम्नानुसार तथ्य प्राप्त हुए :-

तालिका क्रमांक – 01
खेल जीवन के लिए आवश्यक होने की राय संबंधी विवरण

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	बहुत अधिक	152	50.66
2.	सामान्य	88	29.34
3	कम	60	20.00
	योग	300	100.00

उपरोक्त तालिका क्रमांक 01 से यह स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं में 50.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने खेल को जीवन में बहुत आवश्यक होना बताया, जबकि लगभग 29.34 प्रतिशत ने इसे सामान्य रूप से आवश्यक स्वीकार किया, इसके साथ ही 20.00 प्रतिशत कामकाजी महिलाओं ने इसके महत्व को अल्प रूप में ही स्वीकार किया है।

कामकाजी महिलाओं के जीवन में झांकने का एक प्रयास किया गया, जिसके द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया कि कामकाजी महिलाओं को खेल पसंद हैं, अथवा नहीं। इसके प्रतिउत्तर में प्राप्त आँकड़ों निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है :-

तालिका क्रमांक – 02
खेल पसन्दगी संबंधी विवरण

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	हां	166	55.33
2.	नहीं	60	20.00
3.	कभी-कभी	74	24.67
	योग	300	100.00

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 02 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि खेल पसंदगी के संबंध में महिलाओं के अपने-अपने मत या विचार हैं। महिलाओं को खेल पसन्द है के संबंध में प्राप्त आंकड़ा इस प्रकार है – 55.33 : महिलाओं को खेल पसंद है, 20 % महिलाओं को खेल पसन्द नहीं है तथा 24.67 % : महिलाओं को खेल कभी पसंद है तो कभी नहीं। 20 % महिलाएं खेल को बिल्कुल पसन्द ही नहीं करती तो 24.67 % कभी-कभी पसन्द करती हैं। यदि हम यह कहें कि समग्र में 44.67 % : महिलाएं शहडोल संभाग में खेल को पसन्द ही नहीं करती तो गलत न होगा।

तालिका क्रमांक 03 में कामकाजी महिलाओं की इस अभिरुचि को प्रदर्शित किया गया है, कि वे खेल को किस रूप या स्वरूप में पसंद करती हैं, जिसके अंतर्गत खेल को खेलना या देखना के रूप में निम्नानुसार दर्शाया गया है :-

तालिका क्रमांक – 03
खेलों को किस रूप में पसंद करती हैं संबंधी विवरण

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	खेलना	114	38.00
2.	देखना	186	62.00
	योग	300	100.00

महिलाओं खेलों को किस रूप में पसंद करती हैं – खेलना या देखना। इस तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि कुल 38.00 % : कामकाजी महिलाओं को खेलों में सहभागिता करना पसंद है, जबकि 62.00 % कामकाजी महिलाएं खेलों को देखना ही पसंद करती हैं।

शोधार्थी ने कामकाजी महिलाओं से जब यह जानने का प्रयास किया कि उन्हें किस प्रकार के खेल पसंद हैं, तो प्राप्त जानकारी एवं उत्तर निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है :-

तालिका क्रमांक 04
खेल पसंदगी का प्रकार संबंधी विवरण

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	इन्दोर	167	55.67
2.	आउटडोर	133	44.33
	योग	300	100.00

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 04 के अवलोकन दौरान यह पाया या कि खेल पसंदगी का प्रकार संबंधी विचार के प्रति महिलाओं की अपनी रुचि है। आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि 55.67 % महिलाएं इन्दोर खेलों को पसन्द करती हैं और 44.33 % महिलाएं आउटडोर खेलों को पसन्द करती हैं।

निम्न तालिका क्रमांक 05 में महिलाओं द्वारा अपने रोजगार के साथ खेलों को समय दिये जाने संबंधी जानकारी के अंतर्गत विवेचन है कि कामकाजी महिलाएं अपने व्यवसाय के साथ खेलों को समय दे पाती हैं अथवा नहीं ? खेल और व्यवसाय में वे किस प्रकार सामंजस्य बनाती हैं, इसका विवरण प्रस्तुत किया गया है:-

तालिका क्रमांक – 05
रोजगार के साथ खेलों को समय देने संबंधी विवरण

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	158	52.66
2.	नहीं	69	23.00
3.	कभी-कभी	73	24.34
	योग	300	100.00

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 05 का अवलोकन किया गया जिससे यह पता चलता है कि महिलाएं रोजगार के साथ खेलों को समय देती हैं, जिसकी संख्या 158 (लगभग 52.66%) है। केवल 69

(लगभग 23 % महिलाओं ने ही शोध के दौरान, शोधार्थी को यह बतलाया कि वे अपने सामान्य जीवन एवं रोजगार में व्यस्तता के कारण खेलों को समय नहीं दे पाती। 24.34 % : महिलाओं से यह मत प्राप्त हुआ, कि वे कभी-कभी खेल को रोजगार के साथ समय दे पाती हैं ।

शोधार्थी द्वारा जब यह जानने का प्रयास किया गया कि उनके खेल के प्रति रुझान पर उनके परिवार पर क्या दृष्टिकोण है ? क्या उनके परिवार, उनके खेल के प्रति रुझान को पसंद करते हैं ? जो तथ्य प्रकाश में आये वे निम्न तालिका में प्रदर्शित किये गये हैं :-

तालिका क्रमांक – 06
खेल के प्रति रुझान से परिवार की पसन्दगी सम्बन्धी विवरण

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	126	42.00
2.	नहीं	90	30.00
3.	मालूम नहीं	84	28.00
	योग	300	100.00

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 06 में कामकाजी महिलाओं का खेलों में रुझान देखकर परिवार के सदस्यों की प्रतिक्रिया सम्बन्धी प्राप्त आंकड़ों से यह जानकारी प्राप्त होती है कि 42.00 % : परिवार के सदस्य कामकाजी महिलाओं के खेलों में रुझान को प्रोत्साहित करते हैं। कामकाजी महिलाओं के खेलों में रुझान से 30.00 % : पारिवारिक सदस्य आंशिक अप्रसन्न हैं। कामकाजी 28.00 प्रतिशत महिलाओं ने इस प्रश्न के संबंध में अनभिज्ञता जाहिर की है।

शोध के दौरान, कामकाजी महिलाओं को उनकी खेल गतिविधियों के लिए उनके परिवार का सहयोग प्राप्त होता है अथवा नहीं, यह जानने का प्रयास किया गया। इसका विवरण निम्न तालिका क्रमांक 07 में प्रस्तुत है :-

तालिका क्रमांक – 07
खेल में परिवार के लोगों का सहयोग देने सम्बन्धी विवरण

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	184	61.34
2.	नहीं	116	38.66
	योग	300	100.00

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 07 से यह पता चलता है कि – जब कामकाजी महिलाओं से यह पूछा गया कि क्या आपके खेल के लिए परिवार के सदस्य सहयोग देते हैं अथवा नहीं, तब 61.34% मात्र सहयोग देने की स्थिति में प्राप्त हुए हैं। खेलों में परिवार के लोगों का सहयोग के संदर्भ में 38.66% महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि उनके परिवार के लोग खेलों के लिए उनका सहयोग नहीं करते।

खेलकूद में महिलाओं की भागीदारी के प्रति समाज के नजरिये को महिलाएं किस दृष्टिकोण से देखती हैं ? वे समाज के दृष्टिकोण को उचित समझ रही हैं अथवा नहीं ? जब उनसे यह जानने का प्रयास किया तो निम्न तथ्य प्रकट हुए :-

तालिका क्रमांक – 08

खेलकूद में महिलाओं के रुझान के प्रति समाज का दृष्टिकोण सम्बन्धी विवरण

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	हां	136	45.34
2.	नहीं	42	14.00
3.	मालूम नहीं	122	40.66
	योग	300	100.00

उपरोक्त तालिका क्रमांक 08 के अवलोकन से जानकारी प्राप्त होती है कि जब कामकाजी महिलाओं से पूछा गया कि वे खेलकूद में महिलाओं की भागीदारी के प्रति समाज के दृष्टिकोण से संतुष्ट हैं, तो 45.34 % उत्तरदाताओं का मत समस्या के समाधानात्मक दृष्टिकोण के साथ प्रसन्नता को समेटे हुए है। समाज का एक पक्ष ऐसा भी है जो खेलकूद में महिलाओं की भागीदारी से प्रसन्न नहीं है। इनकी संख्या 14.00 % है। इस वर्ग की मानसिकता से अज्ञान का अंधकार हटाने और ज्ञान का दीप प्रज्ज्वलित करने की आवश्यकता है। कामकाजी 44.66 % महिलाओं ने इस प्रश्न के संबंध में अनभिज्ञता जाहिर की है। मालूम नहीं कब तक निम्न जिज्ञासाओं एवं प्रश्नों को जन्म देता है—

DISCUSSION

कामकाजी महिलाएं अपने कार्यक्षेत्र में अपनी भूमिका का निर्वहन करने के साथ-साथ खेल एवं शिक्षा को भी महत्व प्रदान कर रही हैं, साथ ही घर-परिवार की जिम्मेदारियाँ भी बखूबी निभा रही हैं। कामकाजी महिलाओं में खेल एवं शिक्षा के प्रति जिज्ञासा एवं रुचि तो है, किन्तु पर्दा प्रथा, सामाजिक कुरीतियाँ एवं समाज की मानसिकता उनकी इस सोच को संकुचित करती है। कामकाजी महिलाओं का मानना है कि जीवन के लिए खेल एवं शिक्षा आवश्यक है और इसमें परिवार का सहयोग भी महिलाओं को प्राप्त हो रहा है। यह बात महत्वपूर्ण है कि यह प्रतिशत सीमित है जो लगातार बढ़ रहा है। कामकाजी महिलाओं का मानना है कि खेल में सरकारी सुविधाओं की कोई कमी नहीं है, बल्कि उन सुविधाओं का सही क्रियान्वयन न होने के कारण वे सर्वसुलभ नहीं हो पाती हैं। कामकाजी महिलाओं में अधिकांश महिलाएं ऐसी थीं जिन्होंने शिक्षा प्राप्त करने के दौरान ही खेल में सहभागिता दर्ज कराई। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात वे खेलों को देखने तक ही सीमित हो रही हैं। यदि वे खेलती भी हैं तो इनडोर खेलों को ही महत्व प्रदान करती हैं। अधिकांश कामकाजी महिलाओं का मानना है कि खेल प्रमाण-पत्रों की उपयोगिता नौकरी दिलाने में नहीं है, इसलिए भी उन्होंने खेल में सक्रियतापूर्वक सहभागिता दर्ज नहीं कराई। कामकाजी महिलाओं में खेल एवं शिक्षा से सम्बन्धित उपलब्धियाँ शहर एवं अच्छे परिवार से सम्बन्धित महिलाओं में देखी गई। किन्तु अब धीरे-धीरे सभी वर्गों की बालिकाएं एवं महिलाएं सहभागिता दर्ज करा रही हैं। कामकाजी महिलाओं का मानना है कि खेल एवं शिक्षा उन्हें शोषण से मुक्ति दिलाने में भी सहायक है।

CONCLUSIONS

कामकाजी महिलाओं के खेल एवं शिक्षा से सम्बन्धित अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निम्नलिखित हैं :

1. कामकाजी महिलाओं में 50.66 प्रतिषत उत्तरदाताओंने खेल को जीवन में बहुत आवश्यक होना बताया, जबकि लगभग 29.34 प्रतिषत ने इसे सामान्य रूप से आवश्यक स्वीकार किया, इसके साथ ही 20.00 प्रतिषत कामकाजी महिलाओं ने इसके महत्व को अल्प रूप में ही स्वीकार किया है।
2. 55.33 प्रतिषत महिलाओं को खेल पसंद है, 20.00 प्रतिषत महिलाओं को खेल पसन्द नहीं है तथा 24.67 प्रतिषत महिलाओं को खेल कभी पसंद हैं।
3. 38.00 प्रतिषत कामकाजी महिलाओं को खेलों में सहभागिता करना पसंद है, जबकि 62.00 प्रतिषत कामकाजी महिलाएं खेलों को देखना ही पसंद करती हैं।
4. 55.67 प्रतिषत महिलाएं इन्डोर खेलों को पसन्द करती हैं और 44.33 प्रतिषत महिलाएं आउटडोर खेलों को पसन्द करती हैं।
5. 52.66: महिलाएं रोजगार के साथ खेलों को समय देती हैं, केवल 23: महिलाओं अपने सामान्य जीवन एवं रोजगार में व्यस्तता के कारण खेलों को समय नहीं दे पाती।
6. 42.00 : पारिवारिक सदस्य कामकाजी महिलाओं के चहुंमुखी व्यक्तित्व विकास के पक्षधर हैं। कामकाजी महिलाओं के खेलों में रुझान से 30.00 प्रतिषत पारिवारिक सदस्य आंशिक अप्रसन्न हैं। कामकाजी 28.00 प्रतिषत महिलाओं ने इस प्रसन्न के संबंध में अनभिज्ञता जाहिर की है।
7. खेलों में परिवार के लोगों का सहयोग के संदर्भ में 38.66 प्रतिषत महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि उनके परिवार के लोग खेलों के लिए उनका सहयोग नहीं करते।
8. 45.34 प्रतिषत महिलाओं की भूमिका और कार्यों के प्रति समाज के विचारों में सकारात्मक परिवर्तन परिलक्षित हो रहे है। कामकाजी 44.66 : महिलाओं ने इस प्रश्न के संबंध में अनभिज्ञता जाहिर की है।

RECCOMENDATION

कामकाजी महिलाएं खेल एवं शिक्षा में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराएं, इस हेतु उन्हें प्रोत्साहन राशि, सुविधाएं एवं इसके साथ ही इसे नौकरी एवं रोजगार के साथ सीधा जोड़ा जाना चाहिए, जिससे वे इस ओर अधिक प्रोत्साहित होंगी। जब कामकाजी महिलाएं खेल एवं शिक्षा में अपनी सहभागिता दर्ज करा रही हों, उस समय उनके लिए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम होना चाहिए, जिससे वे अपने आपको असुरक्षित न मानकर उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अच्छी उपलब्धियाँ अर्जित कर सकें। कामकाजी महिलाएं खेल एवं शिक्षा में अपनी भूमिका अच्छे से निभाएँ इस हेतु सरकार की भूमिका केवल सुविधाएँ उपलब्ध कराने तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए बल्कि उन योजनाओं के क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। कामकाजी महिलाओं से संबंधित खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन ग्रामीण क्षेत्रों में भी किया जाना चाहिए। इससे ग्रामीण महिलाओं को प्रोत्साहन मिलेगा। कामकाजी महिलाओं के खेल एवं शिक्षा हेतु प्रोत्साहन में पुरुष वर्ग का सहयोग महत्वपूर्ण है। अतः पुरुष वर्ग को भी इस हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

REFERENCES

- 1- अल्तेकर (1962): द पोजीशन आफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, मोदीलरल, बनारसीदास प्रकाशन, वाराणसी।
2. एप्टीन सिंधिया एफ (1970) : वुमेन प्लेस, कैलीफोर्निया वि.वि., कैलीफोर्निया।
3. कपूर, प्रमिला (1976) : कामकाजी भारतीय नारी, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
4. गोरे एम.एस. : आर्गेनाइजेशन एण्ड फेमली चेंज, पापुलर प्रकाशन, बंबई।
5. मुकर्जी, राधाकृष्णन (1950) : वुमेन ऑफ इण्डिया, गवरमेंट ऑफ इण्डिया प्रकाशन।
6. शास्त्री शकुन्तला राय (1954) : वुमेन इन वैदिक एज, भारतीय विद्या भवन, बाम्बे।
7. त्रिपाठी चन्द्रवली (1981) : भारतीय समाज में नारी आदर्शों का विकास, दुर्गावती प्रकाशन, गोरखपुर।

8. सिंह, रमा (1988) : शिक्षित हिंदू महिलाएं एवं धर्म बी.आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, नई दिल्ली।
9. वीसप, ईस्टर (1970) : वीमेंस रोल इन इकोनामिक डेवलपमेंट, जार्ज एलेन एण्ड एलपिक लन्दन।
10. मेहता, रमा (1970) : द वेस्टर्न हिन्दू एजुकेटेड वुमेन, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे।
11. सेन गुप्ता (1970) : द स्टडी ऑफ वुमेन इन बंगाल, इंडियन पब्लिकेशन, कलकत्ता।
12. इलिअ एवेन्यू बी. (1974) : वूमेन इ इण्डियन पोलिटिक्स, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
13. इंटरनेशनल सेमिनार्स : 1968-72 एम्पलायमेंट ऑफ वुमेन रिजनल ट्रेड यूनियन, सेमिनार, पेरिस, 26-29 नवम्बर, 1968, फाइनल रिपोर्ट बाई आर्गनाइजेशन फार इकोनामिक को - आपरेशन एण्ड डेवलपमेंट, पेरिस।
14. इंद्रा एम.ए. (1955) : स्टेट्स ऑफ वूमेन इन एन्सिएंट इण्डिया, मोतीलाल, बनारसीदास, वाराणसी।
15. एन्डिएप्पन पी. (1980) : वुमेन एण्ड वर्क-ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ डिसक्रिमिनेशन इन इंडिया एण्ड यू. एस. ए सोमैया पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।